Volume I, Issue I
Special Edition Nov. 2014

Reg. No. MPHIN/28519/12/1/2012-TC
ISSN 2320-8767
Impact Factor - 0.547

# Naveen Shodh Sansar

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)




## "लोकसभा निर्वाचन 2014 - परिणाम एवं प्रभाव"

Editor - Ashish Sharma

**Office Add.** "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
**Mob.** 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

46. भारत सरकार की कृषि नीति में परिर्वतन की आवश्यकता, कठिनाईयाँ एवं सुझाव (प्रो. वीणा बरडे) ..... 131

47. लोक सभा निर्वाचन 2014 में टेण्डर वोट का औचित्य (डॉ. राजकुमार गुप्ता) ..... 133

48. भारत सरकार की महिला सशक्तिकरण की नीति में परिवर्तन आवश्यकता, कठिनाईयाँ एवं सुझाव (डॉ. गुलाब सोलंकी) .... 134

49. लोकसभा निर्वाचन 2014 में मतदान दलों में पीठासीन अधिकारी मतदान अधिकारी क्रमांक 1, 2, 3 ..... 135
की निर्वाचन में भूमिका, चुनौतियां, समस्याऐं, सुझाव (प्रो. अभय सिंह मंडलोई)

50. भारत सरकार की जनसंख्या नीति : एक विवेचन (प्रो. मनु श्रॉफ) ..... 136

51. चुनाव आयोग और चुनाव सुधार (डॉ. पी.पी. पाण्डेय) ..... 139

52. मतदाता जागरूकता अभियान में चुनाव आयोग तथा अन्य सामाजिक एवं शासकीय संस्थाओं की भूमिका, ..... 141
परिणाम, प्रभाव, कठिनाइयों, सुझाव एवं राजनैतिक परिस्थितियों पर प्रभाव(डॉ. रमेश टण्डन)

53. लोक सभा निर्वाचन 2014 में जोनल अधिकारियो/सेक्टर मजिस्ट्रेटो की निर्वाचन में भूमिका, चुनौतियॉ, ..... 143
समस्याएँ एवं सुझाव (डॉ. राजकुमार गुप्ता)

54. लोकसभा निर्वाचन 2014 में राजनैतिक दलों के चुनाव प्रचार का स्तर एवं भारतीय निर्वाचन आयोग की भूमिका ..... 145
(डॉ. ज्योति सोनी)

55. सोशल मीडिया और 2014 का आम चुनाव (2014 लोकसभा चुनावों में नरेन्द्र मोदी ..... 147
के प्रचार अभियान के विशेष संदर्भ में) (जागृति आर्य )

56. भारत सरकार की जनसंख्या नीति में परिवर्तन की आवश्यकता, कठिनाईयां एवं सुझाव (आर. आर. कोचे) ..... 149

57. भारत की आर्थिक नीति – एक अध्ययन (डॉ. अर्चना व्यास) ..... 152

58. The Role Of Women's Empowerment And Domestic Violence In Child Growth And ..... 153
Undernutrition In A Tribal And Rural Community In India (Change The Indian Government
Women Empowerment Policies) (Dr. R.K. Gautam, Swati Chouhan)

59. India's Foreign Trade Policy: Challenges for New Government (Dr. Sunil Phougat) ..... 157

60. Foreign Trade Policy and New P.M. Narendra Modi Government ..... 161
(Dr.Sanjay Prasad, Prof. Deepali Amb)

61. Lok Sabha Elections 2014: Results Cause, Effect, Challenges And Difficulties, Suggestions ..... 164
And Situation (Dr. R.B. Gupta , Dr. Nilofar Qureshi )

62. Parliamentary Elections 2014 In India, Problems And Challenges (Dr. Indira Burman) ..... 167

63. Domestic And International Reactions After The Result Of Lok Sabha Election 2014 ..... 169
(Kishori Patel)

64. Progressive Development In Indian Education Policy, But Needs More Improvement ..... 171
(Dr. Amrita Khatri Dr. Mamta Pathrade)

65. Guideline for Authors/Research Scholars ..... 174

66. Copyright Agreement Form ..... 175

67. Membership Cum Author's Bio - Data Form ..... 176


*************



# मतदाता जागरूकता अभियान में चुनाव आयोग तथा अन्य सामाजिक एवं शासकीय संस्थाओं की भूमिका, परिणाम, प्रभाव, कठिनाइयों, सुझाव एवं राजनैतिक परिस्थितियों पर प्रभाव

**डॉ. रमेश टण्डन**

सहायक प्राध्यापक
महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय, खरसिया (छ.ग.) भारत

**प्रस्तावना** – चुनाव आयोग विभिन्न विभागों के माध्यम से शासकीय संस्थाओं में मतदाताओं को जागरूक करने संबंधी अभियान पिछले कुछ वर्षों से चला रहा है। इससे प्रेरित होकर कुछ सामाजिक संस्थाएँ भी मतदाताओं को उनके अधिकार व कर्त्तव्य बोध कराने की कोशिश में लगी हैं। आयोग शासन के माध्यम से मतदाता जागरूक अभियान चलाने के लिए शैक्षणिक संस्थाओं को पत्र भेजता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम कराने का निर्देश रहता है। महाविद्यालयों में स्वीप कार्यक्रम चलाया जाता है। 'स्थायी एवं मजबूत लोकतंत्र में सबकी भागीदारी जैसे विषय का चुनाव कर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। ऐसे ही विषय से संबंधित विषयों पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन होता है जिसमें पक्ष और विपक्ष में खड़े होकर अपनी बातें तर्कसम्मत ढंग से रखनी होती है। निश्चित रूप से पक्ष का तर्क मजबूती के साथ आता है। अन्य कार्यक्रम में पोस्टर लेखन, नारा लेखन, रंगोली, मानव श्रृंखला, रैली आदि किए जाते हैं।

पोस्टर लेखन में ड्राइंग सीट पर मतदान की प्रक्रिया को प्रतिभागियों द्वारा समझाने की कोशिश की जाती है। मतदान केन्द्र एवं केन्द्र के 100 मी0 की दूरी के भीतर की स्थिति को रंगीन स्केच पेन से उकेरा जाता है। केन्द्र के भीतर पीठासीन अधिकारी, मतदान अधिकारियों, मतदान अभिकर्त्ताओं एवं कंट्रोल यूनिट/बैलेट यूनिट की स्थिति को निरूपित किया जाता है। पंक्तिबद्ध जाते हुए मतदाताओं जिनमें पुरूषों एवं महिलाओं की पंक्तियां अलग-अलग होती हैं, को दर्शाया जाता है। केन्द्र के बाहर परन्तु 100 मीटर के भीतर की स्थिति को भी अंकित किया जाता है। बी0 एल0 ओ0 की सीट, सुरक्षा गार्ड, जल की व्यवस्था, शौचालय की उपलब्धता आदि सारी बातों का उल्लेख प्रतिभागी चित्रों, कार्टून, संकेतों, रेखाचित्रों आदि के माध्यम से बखूबी करता है।

नारा लेखन में अपने विचारों को प्रतिभागी, छोटी-छोटी पंक्तियों एवं तुकबंदियों में लिखता है। हमारे महाविद्यालय में इस कार्यक्रम को आयोजित किया गया। इसमें प्रतिभागियों ने कुछ इस तरह के नारे लिखे थे-

मतदान एक वरदान है।
यह सबका अधिकार है।।
लालच देकर वोट जो मांगे।
भ्रष्टाचार करेगा आगे।।
नर हो या नारी हो।
मतदान में सबकी भागीदारी हो।।
स्थायी लोकतंत्र।
मजबूत लोकतंत्र।।

इन सभी नारों से मतदाताओं में निश्चित रूप से जागरूकता पैदा होती है। इनमें शत् प्रतिशत मतदान, लालचरहित मतदान की अपील की गई है। स्थायी एवं मजबूत लोकतंत्र की कामना भी की गई है।

खासकर छात्राओं के लिए एक कार्यक्रम जिसमें वे अपने प्रिय रंगों के साथ खेलती हैं, रखा जाता है- वह है, रंगोली । रंगोली के माध्यम से छात्राएँ, जो उन्होंने देखा है, जाना है, अनुभव किया है, साथ में वे जो बातें जनता से कहना चाहती हैं, को फर्श पर रंगती हैं। परन्तु बालिकाओं द्वारा मतदाताओं को जागरूक करने का यह तरीका मात्र क्षणिक होता है और अपने सहपाठी मतदाता के लिए ही होता है, यह इसका दु:खद पहलू है।

महाविद्यालय के छात्र मानव श्रृंखला एवं रैली के माध्यम से लोगों को शत् प्रतिशत एवं भयरहित मतदान के लिए प्रेरित करते हैं। रैली के दौरान विभिन्न नारों से जन समुदाय गुंजायमान भी होता है। जिन नारों को हमने 'नारा लेखन प्रतियोगिता' के माध्यम से पाया था उसमें से चुनींदे नारों का प्रयोग रैली में होता है। यही एक सशक्त माध्यम होता है जब नारों से मतदाता वास्तव में प्रभावित होता है।

इसके अतिरिक्त आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता, प्राथमिक/माध्यमिक शाला शिक्षक ने बी0 एल0 ओ0 का कार्य करते हुए सभी मतदाताओं को मतदाता पर्ची बांटी। यह भी मतदाता जागरूक अभियान का एक हिस्सा हुआ जिसमें मतदाताओं द्वारा मतदान केन्द्र पर दिखाए जाने वाले परिचय-पत्र का सरलीकरण हो गया। मतदान की तारीख को मतदाता परिचय-पत्र या अन्य परिचय-पत्र खोजना मतदाता के लिए सरदर्द हो जाता था। परन्तु मतदाता परिचय-पत्र की व्यवस्था सही वक्त पर हो जाने से सबको मतदान करना आसान हुआ।

शैक्षणिक संस्थाओं यथा महाविद्यालयों के माध्यम से जिस प्रकार मतदाता जागरूकता अभियान चलाये जाते हैं वह एक सशक्त माध्यम है मतदाता को जागरूक करने का। वह इसलिए कि महाविद्यालयीन छात्र-छात्राएँ स्वयं में मतदाता होते हैं जिसके कारण कार्यक्रमों को वे हल्के में नहीं लेते, साथ में उनके सामने रोजगार उन्मुख भविष्य भी रहता है जिसे वे स्थायी व मजबूत लोकतांत्रिक सरकार के माध्यम से पूरा होते हुए देखना चाहते हैं। हमारे महविद्यालय खरसिया में आयोजित कार्यक्रम की एक झलक नीचे दिए समाचार पत्र के टुकड़े से भी अवलोकित किया जा सकता है।

**परिणाम** – महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं ने स्वीप कार्यक्रम के तहत जो कुछ महाविद्यालय के भीतर किया, मेरे द्वारा किए एक सर्वे के अनंसार, 70 प्रतिशत ने अपने घरों में बताया। महाविद्यालय के बाहर मानव श्रृंखला या रैली की गई, वह तो तुरन्त प्रभावशाली हो गया क्योंकि उसे लोगों ने सुना, देखा। एक दिन बाद जब प्रतिभागियों के नाम या/व फोटो समाचार-पत्र में छपे, तब उन्होंने फिर से एक बार कार्यक्रम के बारे में घर में बताया। इससे वे स्वयं तो जागरूक हुए, अपने घर, परिवार और आसपास के लोगों को भी जागरूक किए। साथ में बी0 एल0 ओ0 द्वारा घर-घर जाकर मतदाता पर्ची बांटने से भी लोग जागरूक हुए। परिणाम सामने है- छत्तीसगढ़ विधान सभा चुनाव

एवं भारत लोक सभा चुनाव में एक स्थायी एवं मजबूत लोकतंत्र की स्थापना हुई। लोकसभा चुनाव के नतीजे से जो सरकार नई दिल्ली में राज कर रही है, क्या उसका मुखिया पूरे विश्व में विख्यात नहीं हुआ है ? जरूर हुआ है। ऐसा जनता ने किया है, जागरूक जनता ने किया है। स्थायी एवं मजबूत लोकतन्त्र की स्थापना के लिए चलाए जा रहे 'मतदाता जागरूकता अभियान ने किया है।

**प्रभाव** – इस अभियान से मतदाताओं ने अपने अधिकार को जाना, समझा। अपने एक-एक मत के महत्त्व को समझा। अधिक-से-अधिक मतदान हुआ। पिछली विधान सभा चुनाव में घरघोड़ा क्षेत्र के अन्तर्गत औराईमुड़ा नामक मतदान केन्द्र में मैं पीठासीन अधिकारी था, केन्द्र का गांव एवं आश्रित गांव कुछ पिछड़ा था, आदिवासी इलाका था, कुछ जंगली क्षेत्र था, इसके बावजूद वहाँ 98.4 प्रतिशत मतदान हुआ। मैं यह आंकड़ा देखकर दंग रह गया। मैंने कई चुनाव करवाया है, परन्तु ऐसा परिणाम नहीं आया था। मैं समझ गया कि यह परिणाम मतदाता जागरूकता अभियान के प्रभाव से ही आया है। दूसरा प्रभाव भयरहित व बिना लालच के मतदान हो रहा है। मतदाता जागरूकता अभियान के दौरान किए गए रैली के नारों से प्रभावित होकर भयरहित व बिना लालच के मतदान हुए हैं। यह तथ्य अधिक मतदान से ही स्पष्ट हो जाता है। यदि जनता में भय होता तो मतदान कम हो जाता। यदि कुछ जनता को पैसे या वस्तु दिया जाता तो ये मतदाता मतदान तो करते परन्तु जिनको पैसा नहीं मिलता वे मतदान करने नहीं जाते, इस प्रकार मतदान की प्रतिशतता कम हो जाती। परन्तु आंकड़े ऐसा नहीं कहते, मतदान की प्रतिशतता अधिक है। अत: स्पष्ट है कि मतदाता जागरूकता अभियान ने अपना काम किया है। आने वाले समय में इस अभियान के फलस्वरूप निष्पक्ष चुनाव, भयरहित चुनाव, शत् प्रतिशत चुनाव होगा एवं स्थायी लोकतंत्र की स्थापना होगी। अगला प्रभाव इसका यह भी होगा कि इसका अनुकरण अन्य देशों में भी होगा।

**कठिनाइयाँ** – नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में रैली के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक करना कुछ कठिन होगा। जो पार्टी पैसे के बल पर सरकार बनाना चाहती है, वह इस अभियान को असफल बनाने का प्रयास करेगी।

**सुझाव** – मतदाता जागरूकता अभियान के तहत समस्त कार्यक्रमों का आयोजन मतदान के ठीक 2 या 3 दिन पूर्व करना चाहिए, जिससे इसका प्रभाव अधिक-से-अधिक वांछित पड़े, मतदान की तारीख तक कार्यक्रम का असर बना रहे, लोग रैली के प्रभाव में बने रहें। इसमें ज्यादातर रैली निकाले जाएं एवं नारों का निर्धारण चुनाव आयोग द्वारा कर दिया जाए। इससे सरकारी अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा आचार संहिता का भी होगा क्योंकि यदि नारों में किसी एक पार्टी का समर्थन परिलक्षि तब कार्यक्रम आयोजक खतरे में पड़ जाएगा। यह अभियान ग्र नगर पंचायत, नगरपालिका व नगर निगम द्वारा भी आयोजि साथ में मतदान के लिए लालच दिखाए जाने पर या अन्य किस गड़बड़ी किए जाने पर सजा/दण्ड या जुर्माने के प्रावधानों से भ नेता को रैली या कार्यक्रम के माध्यम से अवगत कराया जाए।

जो इस अभियान के विरोधी हो सकते हैं या जिनको इस जनमत संबंधी हानि हो सकती है, उन्हें उसके स्तर पर ऐसे क सम्पन्न कराने की जिम्मेदारी सौंपी जाए।

मतदाता जागरूकता अभियान के अन्तर्गत मात्र रैली मतदान की तिथि से 3 महीने पूर्व शैक्षणिक संस्थाओं के माध्य सप्ताह एक दिन- शनिवार को 40 मिनट के लिए आयोजित कर इसमें आयोग द्वारा निर्धारित नारों के माध्यम से मतदाताओं किया जाए। परन्तु पुन: एक बार कहूँगा- इस अभियान के अन कार्यक्रमों को मतदान तिथि से 2-3 दिन पूर्व या मतदान दल सम्पन्न कराने के लिए रवानगी के तुरन्त पूर्व कराया जाए ताकि जनता के मानस पटल पर कार्यक्रमों की अमिट छाप कम-से- तक बनी रहे।

**राजनैतिक प्रभाव** – मतदाता जागरूकता अभियान से जागरूक होता ही है, राजनीतिक दल या समूह भी सचेत राजनीतिक दल कुछ भी ऐसे कार्यों के करने से घबराते हैं जिससे बदनाम हो जाए। बलपूर्वक या लालचपूर्वक मत हासिल करने में रहे हैं। इसके लिए मीडिया भी कारगार सिद्ध हुआ है। किसी एक नेता के मतदाताओं को लालच देने संबंधी कार्य को मीडिया ज माध्यम से सामूहिक करता है, तब ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति जाती है। साथ ही वह व्यक्ति या तथाकथित नेता जनता की भर्त्स भी होता है, उसका मार्केट गिरने लगता है। मतदाता की नजरों व्यक्ति या दल का गिरना तभी होता है जब मतदाता जागरूक

अत: मतदाता जागरूकता अभियान को आगामी 20 क जारी रखने की आवश्यकता है। इसके बाद जनता स्वयमेव ज होगी।

*************